सल्तनत कालीन स्थापत्य कला

- 37th lecture by

Mamta Rani
History Depart.
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA

21-05-2020.

Scanned with CamScanner

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला

- 37th lecture

सल्तनत काल में स्थापत्य कला की एक नयी हिन्दू मुस्लिम शैली का विकास हुआ। इस शैली के माध्यमसे स्थापत्य कला में कुछ नवीन तकनीकियों पहलीबार भारतीय स्थापत्य कला में प्रचलित हुई जैसे महलों का निर्माण, गारे का उपयोग, प्लास्टर का उपयोग, गुम्बद निर्माण तथा स्थापत्य को सजाने के लिए कुरान की आयतों का उत्कीर्णन तथा अरबेस्क (कमी न खत्म होने वाली लता) इत्यादि।

सल्तनतकालीन स्थापत्य कला के विकास में मुख्यतः तीन चरण देखे जा सकते हैं –

① गुलाम और खिलजी काल
② तुगलक काल और
③ लोदी काल।

⇒ मामलूकों एवं खिलजी काल में सल्तनतकालीन स्थापत्य पर हिन्दू प्रभाव ज्यादा दिखायी देता है। इस कालकी ज्यादे पुराने मंदिरों देवालयों की सामग्रियों से ज्यादा निर्मित है। इस काल की प्रमुख इमारतों में –

* कुव्वत-उल-इस्लाम मस्जिद –
इस मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा करवाया गया था। मार्शल के अनुसार इसका निर्माण 27 मंदिरों के ध्वंशावशेषों पर हुआ था।

* कुतुबमीनार → कुतुबुद्दीन ऐबक द्वारा 1206 में इसका निर्माण प्रारंभ करवाया गया इल्तुतमिश ने इसे पूरा करवाया। प्रारंभ में इसमें 4 मंजिलें थी, जो वर्तमान में घट कर चार ही रह ही गयी हैं। इसका निर्माण कुतुबुद्दीन बख्तियार काकी की याद में करवाया गया था।

Scanned with CamScanner

* अढ़ाई दिन का झोपड़ा मस्जिद :-

इस मस्जिद का निर्माण कुतुबुद्दीन ऐबक ने अजमेर ने करवाया था। इल्तुतमिश द्वारा इसे विस्तार दिया गया। ये मस्जिद विग्रह राज बीसल देव द्वारा निर्मित सरस्वती मंदिर को तोड़ कर बनवायी गयी थी। इसकी दीवारो पर हरकेली नाटक आज भी खुदा है।

* इल्तुतमिश का मकबरा :-

इस मकबरे का निर्माण इल्तुतमिश द्वारा 1235 में करवाया गया। यह एक अलंकृत इमारत है जिस पर कुरान की आयते खुदी हैं। यह मकबरा गुम्बद निर्माण की इस्लामिक शैली से संबंधित है।

* अलाई दरवाजा →

इसका निर्माण अलाउद्दीन खिलजी द्वारा 1310-11 ई० में करवाया गया। लाल पत्थरों और संगमरमर द्वारा निर्मित यह संरचना कुतुब-मीनार के लिए दक्षिणी दरवाजे का कार्य करती थी। यह एक आकर्षक इमारत है, जिसमें कुरान की आयते, नाल आकार वाली मेहराबों, कुंगरेदार मेहराबों का प्रयोग किया गया है। यह इमारत अपने अलंकरण की सघनता, वैज्ञानिक मेहराब का प्रयोग और बौद्ध तत्वों के समावेश के लिए जानी जाती है।

* बलबन का मकबरा →

→ बलबन द्वारा निर्मित भवनों के करीब बनी ये इमारत पूर्ण इस्लामिक शैली पर आधारित पहली इमारत थी। इसी में पहली बार वैज्ञानिक मेहराब का प्रयोग दिखायी देता है।

Scanned with CamScanner

→ इस वर्ग की अन्य इमारतों में जमात खाना मस्जिद निजामुद्दीन औलिया की दरगाह, अखा मस्जिद इत्यादि प्रमुख है।

→ स्थापत्य कला का दूसरा वर्ग तुगलक कालीन वास्तु से संबंधित है। इस काल को इमारतों में विशालता और सादगी पर विशेष महत्व दिया गया है। इस काल के इमारतों में अलंकरण की विभिन्न पद्धतियां नहीं दिखाई देती जबकि सजावट के लिए संगमरमर के पत्थरों का प्रयोग दिखायी देता है। इस काल की प्रमुख इमारतों में -

तुगलकाबाद का किला →
इस किले का निर्माण गयासुद्दीन तुगलक द्वारा करवाया गया था। इस किले में राजमहल जनानाखाना, शाही दरबार इत्यादि का निर्माण किया गया था। इस किले में सलामी दीवारों का प्रयोग है

गयासुद्दीन तुगलक का मकबरा →
इस मकबरे का निर्माण कृत्रिम झील के अन्दर किया गया था। इस मकबरे का पंचभुजीय होना, संगमरमर से निर्मित इसका गुम्बद इसकी विशेषता है।

जहांपनाहनगर → मुहम्मदबिन तुगलक ने इस नगर का निर्माण रायपिथौरा व सीरी के मध्य करवाया। यह नगर दीवारों से घिरा था। सतपुला, विजयमंडल, खिड़की मस्जिद एवं बेगमपुरी मस्जिद इत्यादि इसकी बची हुई संरचनाएँ है।

कोटला फिरोजशाह →
इस दुर्ग का निर्माण फिरोजशाह तुगलक द्वारा करवाया गया था। इसके भीतर जन सामान्य के उपयोग के लिए आठ मस्जिदें, जामा मस्जिद, तीन राजमहल एवं शिकारगाहों का निर्माण करवाया गया था। जामा मस्जिद

Scanned with CamScanner

के आगे टोपरा से लाए गये अशोक स्तंभ को स्थापित किया गया। तुगलक काल में निर्मित अन्य इमारतों में कुश्क-ए-शिकार, खान-ए-जहां तलंगानी का मकबरा, काली मस्जिद, कलां मस्जिद इत्यादि प्रमुख हैं।

⇒ लोदी काल →
इस काल की इमारतों में पहले की इमारतों से भिन्न कुछ नवीन शैलियों का प्रयोग दिखाई देता है। जिसमें अष्टभुजीय इमारतें, इमारतों को सजाने के लिए टाइलों का प्रयोग, दोहरे गुम्बद का प्रयोग इत्यादि।

* बहलोल लोदी का मकबरा →
1418 ई० में इस मकबरे का निर्माण सिकन्दर लोदी के द्वारा कराया गया। इस मकबरे में 5 गुम्बदों का प्रयोग किया गया है।

* सिकन्दर लोदी का मकबरा →
यह मकबरा इब्राहिम लोदी के द्वारा बनवाया गया। यह अष्टभुजीय आकार का है और एक बड़े प्रांगण में उद्यानों के बीच स्थित है।

* मोठ की मस्जिद →
सिकंदर लोदी के वजीर मियां भुवा द्वारा निर्मित यह मस्जिद लोदी कालीन स्थापत्य का सबसे खूबसूरत उदाहरण है। इस मस्जिद छत्रियों और टाइलों का खूबसूरत प्रयोग किया गया है। मार्शल के अनुसार- लोदियों की स्थापत्य कला में जो भी सबसे सुन्दर उसका संक्षिप्त रूप मोठ की मस्जिद में विद्यमान है।

पर्सी ब्राउन ने लोदियों के काल को मकबरों का युग कहा है।

=*=